## पद १७

(राग: पिलु जिल्हा - ताल: दीपचंदी)

अरे जा श्रीप्रभु रिझवा। हे वय जाते अहा हा हा।।धु.।। अहा तारुण्य मद धन हे कुणा हो शेवटा नेले। क्षणिक हो रंग हा हिरवा। हे वय जाते अहा हा हा।।१।। अहाहा या विषयभोगा किती हो दीन तुम्ही झालां। हे जन हो, स्वानुभव आठवा। हे वय जाते अहा हा हा।।२।। स्वकर्में चालते जग हे प्रिय स्त्री मित्र सुत बंधु। अशा बोधे मना फिरवा। हे वय जाते अहा हा हा।।३।। पहा हो कल्पजीवी शूर कवि राजे कुठें गेले। मी मोठा दंभ हा हटवा। हे वय जाते अहा हा हा।।४।। महायोगी तपस्वी हे कसे एकांत सुखवासी। तसा एकांत सुख सेवा। हे वय जाते अहा हा हा।।५॥ शरण जा बोध चिन्मार्तांड। रूपा पूर्ण तुम्ही जाणा। निजानंदा मनीं उसवा। हे वय जाते अहा हा हा ॥६॥